SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति

रविन्द्र चौबे, (Ph.D.), हिंदी विभाग
किरोड़ीमल शास. कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, रायगढ़, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
रविन्द्र चौबे, (Ph.D.), हिंदी विभाग
किरोड़ीमल शास. कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, रायगढ़, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 24/05/2021
Revised on : -----
Accepted on : 31/05/2021
Plagiarism : 01% on 24/05/2021

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Monday, May 24, 2021
Statistics: 41 words Plagiarized / 4198 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

NRrhlx<+ dh yksd laLd`fr lkjka'k NRrhlx<+ dh laLd`fr thoar vkSj vf)rh; gSA NRrhlx<+ dh laLd`fr ds varxZr vapy ds mRlo] u`R;] laxhr] yksd f'kYi vkSj eM+bZ&esyk vkrs gSaA ;gkW ds yksd dykdkj egkHkkjr dkyhu ;qn~/kksa dh dgkfu;ksa dks vkRelkr dj u`R; vkSj laxhr ds #i esa ,d vuks[ks <+ax ls izLrqr djus dh vn~Hkqr dYiuk'khyrk vkSj izfrHkk j[krs gSaA fdlh Hkh ns'k ;k izns'k dh laLd`fr dk Kku ogka ds yksd thou ds ek/;e ls laHko gksrk gSA fdlh Hkh vapy dh vf/kdkfjd tkudkjh mlds lkfgR; ,oa izpfyr yksd xhrksa] dFkkvksa] xkFkkvksa] yfyr dykvksa vkSj laxhr esa feyrh gSA ;gkW /keZ] dyk vkSj bfrgkl dh f=os.kh vfojy #i ls

शोध सार

छत्तीसगढ़ की संस्कृति जीवंत और अद्वितीय है। छत्तीसगढ़ की संस्कृति के अंतर्गत अंचल के उत्सव, नृत्य, संगीत, लोक शिल्प और मड़ई–मेला आते हैं। यहाँ के लोक कलाकार महाभारत कालीन युद्धों की कहानियों को आत्मसात कर नृत्य और संगीत के रुप में एक अनोखे ढ़ंग से प्रस्तुत करने की अद्‌भुत कल्पनाशीलता और प्रतिभा रखते हैं। किसी भी देश या प्रदेश की संस्कृति का ज्ञान वहां के लोक जीवन के माध्यम से संभव होता है। किसी भी अंचल की अधिकारिक जानकारी उसके साहित्य एवं प्रचलित लोक गीतों, कथाओं, गाथाओं, ललित कलाओं और संगीत में मिलती है। यहाँ धर्म, कला और इतिहास की त्रिवेणी अविरल रुप से प्रवाहित होती रहती है। व्रत एवं त्यौहारों का आनंद वर्ष भर लिया जाता है। प्रस्तुत शोध आलेख छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति को उजागर करता है।

मुख्य शब्द

छत्तीसगढ़, लोक साहित्य, लोक संस्कृति.

प्रस्तावना

किसी भी देश या प्रदेश की संस्कृति का ज्ञान वहां के लोक जीवन के माध्यम से संभव होता है, और लोक जीवन को पूरी तरह से समझने के लिये वहां के लोक साहित्य का अध्ययन करना आवश्यक है। अपनी सहज अवस्था में निवास करने वाली जनता की आशा–निराशा, जीवन–मरण, लाभ–हानि और सुख–दुख की अभिव्यंजना जिस साहित्य से प्राप्त होती है, उसे लोक साहित्य कहते हैं। वस्तुतः लोक साहित्य जनता का वह साहित्य है, जो जनता के द्वारा जनता के लिये लिखा जाता है। लोक साहित्य का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। साधारण जनता जिन शब्दों में हंसती रोती है, नाचती गाती है, खेलती है, उन सबको लोक साहित्य की श्रेणी में रखा जा सकता है।

फिर चाहे वह पुत्र जन्म के समय गाए जाने वाला सोहर गीत हो या प्रियजन की मृत्यु पर गाए जाने वाला शोक गीत, चाहे वह खेतों की बुवाई निराई लुआई आदि के समय गाए जाने वाले गीत हो, चाहे अपने पूर्वजों के पराक्रम की प्रशंसा के ऊपर लिखे गये गीत, यह सभी गीत लोक साहित्य के अन्तर्गत रखे जाते हैं। गांव में बढ़े–बूढ़े जाड़े के दिनों में आग तापते हुए अपने जीवन के अनुभवों को छोटी बड़ी कहानियों के रुप में सुनाते हैं, बूढ़ी दादी मां बच्चों को सुलाने के लिये जो लोरियां गाती है, गांव वालों के मनोरंजन के लिये स्वांग या नाटक खेले जाते हैं, साधारण जीवन में बातचीत में कई मुहावरे और कहावतों का प्रयोग किया जाता है। यह सभी कथाएं, नाटक, मुहावरे और कहावतें लोक साहित्य के अन्तर्गत आते हैं। "लोक साहित्य उस निर्मल दर्पण के समान है जिसमें जनता जनार्दन का अखिल तथा विराट स्वरुप पूर्णरुपेण प्रतिबिंबित होता है। लोक संस्कृति का जैसा दिव्य तथा अकृत्रिम प्रतिबिंब इस साहित्य में उपलब्ध होता है, उसका दर्शन अन्यत्र कहाँ? लोक साहित्य की निर्मल निर्झरणी में अवगाहन कर केवल शरीर ही पवित्र नहीं होता बल्कि आत्मा भी पूत और पावन बन जाती है। इसमें जिसे समाज का चित्रण किया है, वह स्वस्थ सदाचारी एवं धर्म भीरु है जिस नीति की प्रतिष्ठा की गई है वह कल्याण मार्ग की ओर ले जाने वाली है। वह मंगलमय पथ की प्रदर्शिका है जिस धर्म का वर्णन किया गया है वह संसार में प्रेम और शांति का संदेश देता है। जिस आर्थिक संगठन का उल्लेख हुआ है वह पीड़ित तथा दलित मानवता के शोषण के ऊपर अवलंबित नहीं है। जिस राजनीति का दिग्दर्शन कराया गया है वह दलीय संघर्ष और विशाक्त वातावरण से कोसों दूर है। धर्म समाज और नीति का यही मनोरम चित्रण इस साहित्य की महत्ता में चार चांद लगा देता है।"[1] किसी भी अंचल की अधिकारिक जानकारी उसके साहित्य एवं प्रचलित लोक गीतों, कथाओं, गाथाओं, ललित कलाओं और संगीत में मिलती है। यदि हम संपूर्ण भारत की लोक कला और संस्कृति पर दृष्टिपात करें तो हमें इन्द्रधनुषी संस्कृति के दर्शन होते हैं। उत्तर भारत में पंजाब की लोक कला से जुड़ी गाथाएं गीत भांगड़ा, गिद्दा, पश्चिम भारत में महाराष्ट्र की लोक कहानियां गीत, लावणी, गुजरात की लोक कहानियां गीत गरबा, दक्षिण भारत के केरल में ओडम के अवसर पर महिलाओं द्वारा अपने कला की प्रस्तुति, कर्नाटक में प्रसिद्ध यक्षगान, बंगाल की संस्कृति का परिचय देने वाला वहां का समृद्ध साहित्य रविंद्र संगीत या फिर असमिया लोक कहानियों एवं नव वर्ष पर किया जाने वाला बिहू नृत्य। छत्तीसगढ़ अंचल की संस्कृति में भी लोक कला एवं संगीत की गौरवशाली परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है। छत्तीसगढ़ी संस्कृति एक ओर जहां भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है, वहीं दूसरी ओर इसकी अपनी आंचलिक विशिष्टता भी है। छत्तीसगढ़ की प्राचीन संस्कृति इसके समृद्ध लोक साहित्य में परिलक्षित होती है।

छत्तीसगढ़ का लोक जीवन अपनी सरलता और सहजता में अद्वितीय है। छत्तीसगढ़िया निर्मल और उदार मन के, छल कपट से दूर, भात–बासी और चटनी खाकर धोती–लुगरना पहन कर संतुष्ट रहने वाले और संतोषी स्वभाव के हैं। छत्तीसगढ़ में ब्राम्हण, वैश्य, सुनार, ठाकुर, कुर्मी, हरिजन, गौड़, सतनामी, कोरुकू, पैनका और भुईया आदि जातियां निवास करती है, इनमें सबसे बड़ी संख्या गौड़ और सतनामियों की है। इस अंचल में रहने वाली जातियों को मुख्य रुप से आर्य तथा अनार्य श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है। यहां की प्रादेशिक संस्कृति के निर्माण में मुख्य रुप से इन जातियों का ही महत्व है। आर्य–अनार्य परंपराओं में जो समन्वयात्मक संगठन यहां होता रहा उनकी जड़े काफी गहरी है, यही कारण है कि आज भी दोनों ही संस्कृतियों के अवशेष यहां मिल जाते हैं। भौगोलिक कारणों से आरण्यक जातियों का इस क्षेत्र में बाहुल्य रहा। इनमें से कुछ तो पहाड़ की चोटियों और घने जंगलों में आज भी बसी है और कुछ लोग मैदानों में आकर गांव में बस गए हैं। यह आरण्यक जातियां सीधी सादी निष्कपट और अकृत्रिम जीवन पध्दति को लेकर चलती है। लोक जीवन के सहज स्वाभाविक और आडंबर हीन कार्य व्यापार का यहां की स्थानीय संस्कृति पर गहरा रंग है। "छत्तीसगढ़ी अर्धमागधी की दूहिता तथा अवधी और बघेली की सहोदरा है।"[2]

छत्तीसगढ़ी, छत्तीसगढ़ की जनभाषा है, यह हिन्दी भाषा परिवार की एक महत्वपूर्ण सदस्य है। पूर्वी हन्दी वर्ग की अवधी और बघेली इसकी सगोत्रीय भाषाएं है। आज छत्तीसगढ़ी एक पूर्ण और समर्थ भाषा के रुप में विकसित हो रही है। इसका प्राचीन रुप क्या था इसका कोई प्रमाणिक इतिहास तो नहीं है लेकिन इसके बीज यत्र–तत्र यहाँ के लोक साहित्य में बिखरे हुए हैं। छत्तीसगढ़ी के अलावा यहाँ गौडी, मारिया और मुरिया बस्तर क्षेत्र में उरांव या

कुरुख रायगढ़ तथा सरगुजा में बोली जाती है। छत्तीसगढ़ी में अब आवागमन की सुविधा और व्यापारिक कारोबार के चलते मारवाड़ी, पंजाबी, सिंधी भाषाओं के शब्द भी शामिल हो रहे हैं। छत्तीसगढ़ी पर आसपास की भाषाओं का भी प्रभाव पड़ा है। उत्तर में छत्तीसगढ़ी बघेली पूर्व में उड़िया से पश्चिम में मराठी से और दक्षिण में तेलुगु से प्रभावित है।

छत्तीसगढ़ कृषि प्रधान प्रदेश है, यहाँ के प्रायः सभी त्यौहार कृषि से किसी न किसी प्रकार से संबंधित रहते हैं। छत्तीसगढ़ के तीज त्यौहार यहां की कृषि संस्कृति के अविभाज्य अंग हैं। नए वर्ष की शुरुआत चैत्र माह से होती है। भगवान राम का जन्मोत्सव रामनवमी के रुप में मनाया जाता है, इस दिन देवी पूजा के लिये जवांरा बोया जाता है, देवी गीत गाए जाते हैं, अक्षय तृतीया शादी का सबसे बड़ा मुहूर्त होता है, इसे अक्ति भी कहा जाता है। रामनवमी और अक्ति वैवाहिक कार्य बेटी की विदाई के लिये सबसे अच्छा दिन माना जाता है। इसके बाद वट सावित्री का त्यौहार आता है, इस दिन सौभाग्यवती स्त्रियां वट–पीपल वृक्ष की पूजा करके सौभाग्य श्रृंगार जैसे सिंदूर टिकली, चूड़ी आदि दान करती है, जल चढ़ाती हैं, हलवा इस समय का प्रमुख मिष्ठान्न होता है, पूजा पाठ के बाद फलाहार के रुप में इसे ग्रहण किया जाता है। आषाढ़ माह में रथयात्रा भी धूमधाम से मनाई जाती है। बस्तर की रथयात्रा बहुत प्रसिद्ध है। सावन मास में हरेली त्यौहार मनाया जाता है। हरेली के दिन कृषि यंत्रों जैसे हल, रांपा, कुदाली को धोकर सुरक्षित रखा जाता है, और इस दिन पशुओं की पूजा भी होती है। इस त्यौहार में बैगा संस्कृति मुखर होती है। बैगा तंत्र मंत्र का परिमार्जन करते हैं। साधक रात्रि में तंत्र की साधना करते हैं। इस दिन गोबर से दीवारों पर चित्रांकन किया जाता है, द्वार पर लोहे की कील ठोकी जाती है। माघ अगहन मेलों के लिये प्रसिद्ध है, खल्लारी, पाटन, शिवरी नारायण, रतनपुर, मल्हार, सिहावा तुरतुरिया और गिरौदपुरी छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध मेले हैं। इन मेलों में ग्रामीण जन अपने वर्ष भर के कपड़े बर्तन और विवाह के लिये सामान खरीदते हैं। सर्कस और सिनेमा भी यहां दर्शकों का मनोरंजन करते है। यहां छत्तीसगढ़ का लोक नाटक, गम्मत, नाचा आदि पार्टियां रातभर लोगों का मनोरंजन करती है। मेलों में मुख्य रुप से उखरा अर्थात् गन्ने के रस और लाई से बना हुआ स्वादिष्ट व्यंजन लोग खरीदते और खाते हैं। मेले की प्रतीक्षा महीनों पूर्व से की जाती है ऐसे अवसर पर नर–नारी, युवा–युवती, बालक–बालिकाएं सुंदर रंग बिरंगे वस्त्रों और आभूषणों से सुसज्जित होकर मेले का आनंद लेते हैं। फागुन में होली का त्यौहार हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस अवसर पर मनुष्य वर्ष भर के दैन्य निराशा गरीबी को होलिका में जलाकर, रंग अबीर से सराबोर होकर, फाग गाने लगता है। पोरा या पोला त्यौहार भादों मास में आता है, इस दिन बैलों की पूजा की जाती है। नाग पंचमी का त्यौहार भी धूमधाम से मनाया जाता है, इस दिन नाग देवता को दूध लाई समर्पित किया जाता है। बैगा लोग रात भर जागकर सर्व मंत्र सीखते हैं। कहा जाता है कि तंत्र साधना के लिये यह विशेष अवसर होता है। श्रावण मास में राखी का त्यौहार बहनों भाईयों की अटूट रिश्ता के प्रतीक के रुप में मनायी जाती है। इसके एक दिन पूर्व भोजली विसर्जन होता है। इस दिन लोग एक दूसरे के कानों में भोजली रखकर शुभकामनाएं देते हैं। भादों के पहले पक्ष के छठवें दिन हलषष्ठी का उपवास माताओं द्वारा अपने बच्चों की दीर्घायु की कामना के साथ किया जाता है। जन्माष्टमी और गणेश चतुर्थी का त्यौहार भी सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। छत्तीसगढ़ के लोक जीवन में तीजा का त्यौहार भी मनाया जाता है। तीजा के बाद बेटा जूतिया, पितर पक्ष और उसके बाद नवरात्र में देवी पूजा की जाती है। छत्तीसगढ़ के त्यौहारों में पकवान का विशेष महत्व है अलग–अलग त्यौहारों मे अलग–अलग पकवान बनाने का प्रचलन है। करी का लड्डू विवाह के अवसर पर अनिवार्य रुप से बनने वाला स्वादिष्ट पकवान है, ठेठरी खुर्मी पोला और तीजा त्यौहार का विशेष पकवान है। चीला अंगाकर, कचोरी, गुलाब जामुन, जलेबी, समोसा छत्तीसगढ़ के सदाबहार पकवान है। पूजा में अगरबत्ती धूप दीप नारियल फलों की महिमा न्यारी होती है।

छत्तीसगढ़ की सबसे पुरानी जनजातियों में बिंजवार, भूंजिया, बैगा और कमार है। इनमें कमार जाति के लोग सबसे पिछड़े हैं। छत्तीसगढ़ में जादू टोना पर आज भी विश्वास कायम है। कुछ वर्षों पूर्व में जशपुर बस्तर आदि इलाकों में मानव की बलि दी जाती थी। देहातों में आज भी निरपराध महिलाएं टोना करने की शंका में प्रताड़ित की जाती है। जैसे टोना करने वाली महिलाओं का अस्तित्व है वैसे ही मंत्र बल से टोना करने वाले गुनिया का भी

अस्तित्व है। इनकी एक स्वतंत्र जाति बैगा के रुप में छत्तीसगढ़ में ही नहीं समूचे भारत में फैली हुई है। वैसे विश्व में आज भी कई देश है जहां जादू टोना भूत प्रेत पर विश्वास किया जाता है। छत्तीसगढ़ में गांवों में रहने वाले लोग खेती करते हैं। वे स्वभाव से शांतिप्रिय और सीधे–साधे लोग होते हैं। निर्धनता इनके जीवन का अनिवार्य अंग बन गया है, परंतु परस्पर संगठन और सहयोग की भावना उनमें प्रबल होती है। यहाँ की स्त्रियां कर्मठ हैं। यहाँ के पुरुष घुटनों तक धोती, गमछा और सिर पर पगड़ी पहनते हैं। महिलाएं लुगरा पहनती है और विभिन्न प्रकार के आभूषण धारण करती है पैरी, सूती, झुमका, बाली, बाजूबंद, माला मुंदरी, करधनी, फुल्ली आदि। छत्तीसगढ़ में गोदना का भी रिवाज है, गोदना एक काले रंग का गाढ़ पदार्थ होता है, जो खुरई के वृक्ष से निकाला जाता है। बांस की बारीक सुई से लड़की के शरीर के विभिन्न अंगों पर कलात्मक अभिव्यक्ति की जाती है। यह छत्तीसगढ़ की महिलाओं का स्थायी आभूषण होता है।

छत्तीसगढ़ में लौह शिल्प और प्रस्तर शिल्प के कलाकार बसते हैं। छत्तीसगढ़ के कोसा कपड़े की मांग देश ही नहीं विदेशों में भी है, साथ ही कांसे के बर्तनों के लिये भी प्रसिद्ध है। आदिवासियों द्वारा बनाई गई बाँस से निर्मित वस्तुओं की बाजार में बहुत मांग है। धातु शिल्प में सरगुजा की मल्हार, रायगढ़ की झारा और बस्तर की गढ़वा जाति के लोग अपने उत्कृष्ट शिल्प के लिये जाने जाते हैं। रायगढ़ के पास के गांव एकताल के गोविंद झारा एवं कार्तिक झारा विश्व प्रसिद्ध लोक कलाकार हैं। छत्तीसगढ़ के सभी क्षेत्रों में लोहार और कुम्हार बसते हैं। लोहार, लोहे के नागर, रांपा, कुदाल तो बनाते ही है, वे रसोई घर में काम आने वाले सामान जैसे झारा, चिमटा आदि में भी अपनी कला की छाप छोड़ते हैं। कुम्हार न सिर्फ घडे बनाता है, बल्कि खिलौने भी बनाते हैं। कुछ कुम्हार नक्काशीदार घड़ों में अपनी कलात्मक प्रतिभा की छाप भी छोड़ते हैं। रायगढ़ जिले के सिंघनपुर और कबरा पहाड़ में प्राप्त आदिम जनजातियों द्वारा चित्रित शैलाश्रय लोक सभ्यता के विकास के साथ लोक चित्रांकन के इतिहास के साक्षी हैं। सभ्यता के विकास के साथ लोक चित्रांकन भी संस्कृति का अंग गया और हमारे जीवन में अब प्रत्येक कर्मकांड में, कोई मंगल कार्य हो उत्सव या पर्व हो स्त्रियां चौकम बनाती है, दीवाली, देव उठनी एकादशी, जन्माष्टमी और हरियाली अमावस्या को सावन की अगवानी क रुप में किशोरियों और महिलाओं द्वारा घर के आंगन को विभिन्न प्रकार के रंगों से बनी आकृतियों से सजाया जाता है।

छत्तीसगढ़ में जो लोकाचार या मान्यताएं हैं वह भी लोक संस्कृति के अविभाज्य अंग है। बच्चों को बचपन से ही बड़ों का सम्मान करना, दादा–दादी, नाना–नानी, काका–काकी, भैया–भौजी को पैर छूकर प्रणाम करना सिखाया जाता है। बहुएं, जेठ तथा ससुर के सामने नहीं आती वह घूंघट डालकर उन्हें दूर से ही प्रणाम करती है। भांजे–भांजियों को पैर छूकर प्रणाम ना करने का और उन्हें न मारने की मान्यता है। इसी प्रकार खाट उल्टी ना करना, रात में झाडू न लगाना, किसी को झाडू से ना मारना, आंगन और गली में झाडू लगाकर गोबर पानी डालना, बरगद–पीपल और आम के पेड़ को न काटना, बर्तनों को उल्टा ना रखना, नजर बचाने के लिये बच्चों के चेहरे पर काजल लगाना, स्त्रियों द्वारा नारियल को ना फोड़ना, एक रखिया को न काटना, दक्षिण दिशा में सिर रखकर सोना, जूते को उल्टा ना रखना आदि छत्तीसगढ़ के लोकाचार हैं।

भारत में विशेषकर हिन्दू समाज में जन्म से मृत्यु तक सोलह संस्कार प्रचलित है। इसमें गर्भाधान संस्कार, विवाह और अंत्येष्टि संस्कार सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं। छत्तीसगढ़ के साहित्य में इन संस्कारों का उल्लेख प्रायः मिलता है। गर्भाधान के सातवें या आठवें महीने में सधोरी उत्सव मनाया जाता है। उस दिन वर व कन्या दोनों को नहला धुला कर जेवनार दिया जाता है और कुटुंब परिवार तथा समाज के लोगों के लिये भोजन की व्यवस्था की जाती है। शिशु जन्मोत्सव में मां को चौथे दिन जरी पानी और सोंठ के लड्डू खिलाए जाते हैं। छठवें दिन छट्टी कार्यक्रम किया जाता है। छत्तीसगढ़ में प्राचीन काल में बाल विवाह प्रचलित था। कानून बन जाने के बाद भी दूरस्थ देहाती अथवा पिछड़ी जाति के लोगों में बाल विवाह आज भी प्रचलित है। यहां छुट्टा विवाह एवं गुरावट विवाह का भी प्रचलन है। कई जातियों में सगोत्र विवाह वर्जित है। छत्तीसगढ़ में मृतक भोज भी देने का रिवाज है। यहाँ कई जगह 10 (दस) दिनों और कई जगह 13 (तेरह) दिनों में तेरही करने का रिवाज है, जिसमें स्नान, पिंडदान के बाद दान–दक्षिणा और बिरादरी को भोज देने के नियम हैं।

छत्तीसगढ़ के एक प्रशासनिक प्रदेश के रुप में गठन के पश्चात छत्तीसगढ़ के विकास की संभावनाएं भी बढ़ी है। छत्तीसगढ़ का लोक साहित्य अत्यंत समृद्ध है। कृष्ण देव उपाध्याय के शब्दों में ''वह साहित्य उतना ही स्वच्छंद था जितना आकाश में विचरने वाली चिड़िया, उतना ही पवित्र था जितना गंगाजल की निर्मल धारा। उस समय के साहित्य का जो अंश आज अवशिष्ट तथा सुरक्षित रह गया है वही हमें लोक साहित्य के रुप में उपलब्ध होता है।''[3] लोकगीतों लोक कथाओं लोक गाथाओं लोकनाट्य, लोक सुभाषित लोकोक्तियां मुहावरे पहेलियां आदि में छत्तीसगढ़ की सतरंगी लोक संस्कृति के तत्व यत्र–तत्र मिल जाते हैं।

यहाँ के कृषि प्रधान लोक जीवन और यहाँ की सतरंगी ग्रामीण संस्कृति का निदर्शन छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में होता है। कभी संस्कार के अवसर पर, कभी ऋतु के आगमन पर, कभी पर्व उत्सव पर, कभी देवी आराधना के अवसर पर और कभी श्रम का परिहार करते हुए लोकगीत अनायास ही छत्तीसगढ़ियों के कंठ से फूट पड़ते हैं। अपनी ही माटी की गंध अपने में समेटे यह लोक गीता मधुर लय और धुनों के कारण श्रोता को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। इन गीतों में लोक जीवन से जुड़े संदर्भों की निश्चल अभिव्यक्ति होती है। डॉ. शकुंतला वर्मा ने छत्तीसगढ़ी लोकगीतों की विशेषताओं को इस प्रकार रेखांकित किया है "छत्तीसगढ़ी के लोकगीतों में वहाँ का सरस जीवन प्रतिबिंबित होता है। मनोवैज्ञानिक स्तर पर मानव मन की विभिन्न परतें खोल कर उसमें रख दी गई है, सामाजिक दृष्टि से उनमें रीति रिवाजों का उल्लेख और आर्थिक स्थिति का चित्रण होता है। भाषा, छंद, अलंकार और रस इन अनगढ़ गीतों में भी है। रस की प्रतिष्ठा लोकगीतों में खूब मिलती है। संगीतात्मकता उसका एक अनिवार्य तत्व होता है। गीत के लहरों की उद्दाम गति उसमें पाई जाती है। एक विशिष्ट वर्णनात्मकता और एक अनिर्वचनीय उल्लास उसमें रहता है, साथ ही एक विस्मय एक भोली जिज्ञासा, एक अबाध उल्लास से युक्त होते हैं। उल्लास, ओज और क्षोभ तीन प्रमुख वृत्तियों के रुप में विभिन्न सूक्ष्म स्थूल भावों के संचार से पुष्ट होते हुए रख का आनंद प्राप्त करते हैं।"[4] छत्तीसगढ़ी लोग गीतों का विशिष्ट एवं विस्तृत संसार है। इन लोकगीतों में श्रृंगार, करुण, हास्य, वीर और शांत रस पाया जाता है। राउत नाच में वीर रस, ददरिया में श्रृंगार रस, सुवा गीत में करुण रस, जोकड़ गीत में हास्य रस, सेवा गीत, जवारा गीत, गौरा गीत, पंथी गीत में शांत रस पाया जाता है। इस अंचल के कुछ लोकगीत पुरुष प्रधान होते हैं जैसे राउत नाच, डंडा गीत, बांस गीत जबकि सुआ गीत, गौरा गीत, भोजली गीत फुगड़ी गीत आदि केवल महिलाएं ही गाती हैं।

सदियों से शोषण उत्पीड़न और घुटन का दर्द पीता छत्तीसगढ़ अपनी लोक संस्कृति के लिहाज से समृद्ध है। प्रकृति ने इस अंचल को लोकगीत, लोक संगीत और लोक नृत्यों से सजाया संवारा है। ढोल और मांदर की थाप पर थिरकते सामान्य जन के पावों में बिवाइयॉ फट पड़े या बांसुरी की तान पर लहराता उनका आंचल वक्त के थपेड़ों से तार–तार हो जाए वह अपनी पीड़ा को सार्वजनिक रुप से अक्सर गांव की गलियों और शहरों के फुटपाथों पर लोक संगीत और लोकगीतों की बरखा के बीच भाव विभोर हो नृत्य करते मगन ही दिखाई पड़ते हैं। उनके जीवन में रच बस गई विसंगतियों के भीतर पैठने पर स्पष्ट रुप से महसूस होता है कि सुख और विषाद उनकी नियति तथा सौंदर्य अनुभूति और सौंदर्य की अभिवयक्ति और दुरुह जीवन कहीं अन्यत्र शायद ही देखने को मिले। बावजूद इसके यहां के सामान्य जन के भीतर उनकी अपनी माटी की भी सुवासित हो रही है।''[5] छत्तीसगढ़ की लोक कथाओं में भी वे सभी विशेषताएं हैं, जो किसी भी बोली या भाषा की लोककथा में मिलती है। विषय वस्तु, गठन और भाषा–शैली की दृष्टि से छत्तीसगढ़ की कहानियों का अपना वैशिष्टय है। ये कहानियां यथार्थ जीवन के अधिक निकट हैं। इन लोक कथाओं के विषय में डॉ. शकुंतला वर्मा का मत है "लोककथाओं का दायरा बहुत विस्तृत है। एक ओर गरीबी और दरिद्रता का, दूसरी ओर राजसी अमीरी का चित्रांकन इसमें मिलेगा किंतु सुख संपत्ति और मंगल कामना की चाह हर व्यक्ति में मिलती है। अमीरी गरीबी उसे अपनी सीमाओं में नहीं बांधती। व्यक्ति कल्याण और सुख की प्रार्थना ईश्वर से करता है। देव स्तुति पूजा का उललेख भी इनमें आता है, इनमें जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण साथ ही सर्वभूत हित की कामना व्यक्त होती है, जीवन के प्रति आस्था व्यक्त होती है।"[6] छत्तीसगढ़ी लोक कथाओं का अपना विस्तृत संसार है। छत्तीसगढ़ में तीज त्यौहारों और देवी देवताओं पर आस्था बनाए रखने के लिये कई कथाएं मिलती हैं, जैसे नाग पंचमी, भाई दूज, संकट चौथ, भाई जूतिया, कमरछठ, बहुला

चौथ, बेटा जूतिया तीजा की कथाएं। इसी तरह बच्चों के मनोरंजन और जीवन जगत के परस्पर संबंधों की शिक्षा देने वाली शिक्षाप्रद छत्तीसगढ़ी लोक कथाएं हैं। बकरी और शेर, चिड़िया और दाल का दाना, कौवा और गौरैया की कथा। इनके अलावा पशु पक्षियों से संबंधित पंचतंत्र शैली की लोक कथाएं भी यहाँ पाई जाती हैं।

छत्तीसगढ़ की लोग गाथाओं में स्थानीय संस्कृति के रंग घुले मिले रहते हैं। इनके सरल सहज सौंदर्य के सामने सभ्य साहित्य और कविता फीकी लगती है। वाचिक परंपरा की सबसे लंबी गीतात्मक अभिव्यक्ति लोक गाथाओं का स्वरुप है। इन लोक गाथाओं में एक तरफ पारिवारिक और सामाजिक, दूसरी तरफ समाज में व्याप्त असमानता, शोषण और अनाचार के प्रति आक्रोश भी दिखलाई देता है। लोक गाथाओं की दृष्टि से छत्तीसगढ़ अंचल का अपना रंग है, अपनी पहचान है, अपने कला रुप है अभिव्यक्ति की अपनी शैली भी है। लोक गाथाओं में छत्तीसगढ़ का गौरवशाली इतिहास और समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा क दर्शन होते हैं। ये गाथाएं इस अंचल के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दस्तावेज है। लोक गायक प्रेम–प्रधान गाथाएं जैसे अहिमन रानी, केवला रानी और रेवा रानी की कथाओं को लोक वाद्यों के साथ प्रस्तुत कर श्रोताओं को भाव विभोर कर देते हैं। इन लोक गाथाओं में कहीं नारी जीवन की असहाय स्थितियों का मार्मिक चित्रण मिलता है, तो कहीं पारलौकिक शक्तियों का चमत्कार पूर्ण चित्रण। मध्य युग में धार्मिक और पौराणिक गाथाएं फूलबासन और पंडवानी के नाम से लोकप्रिय है। रामायण और महाभारत की कथा लोक गायकों द्वारा प्रस्तुत की जाती है। फूल कुंवर, ढोला, लोरिक चंदा जैसी अनेक गाथाएं बहुत लोकप्रिय हैं। लोक कलाकार लोग गीतों और लोक कथाओं को सुरक्षित रखकर प्राचीन संस्कृति और गौरव पूर्ण इतिहास को प्रस्तुत करते हैं। छत्तीसगढ़ की पौराणिक लोक गाथाओं के अन्तर्गत भरथरी और पंडवानी अधिक प्रसिद्ध है। भरथरी लोक कंठ में गूंजता एक लोग गाथात्मक काव्य है। भरथरी न केवल छत्तीसगढ़ बल्कि समूचे हिन्दी प्रदेश में स्थानीय रीति रिवाजों और परंपराओं से प्रभावित होकर गाया और सुना जाता है। भरथरी लोकगाथा को लोग विस्मय के भाव से अधिक सुनते हैं कारण कि भरथरी के जीवन को लेकर लोक जीवन में प्रचलित अनेक किवदतियां हैं।

पंडवानी छत्तीसगढ़ की विश्व विख्यात लोक गाथा यहाँ के कलाकारों ने देश ही नहीं विदेशों में भी पंडवानी की प्रस्तुति दी है। झाडूराम देवांगन, पुनाराम निषाद, तीजनबाई तो पंडवानी के पर्याय हैं इनके अतिरिक्त रेवा राम साहू, चेतराम, रितु वर्मा, मीना साहू, बाबूलाल वर्मा, अभय वर्मा, शांति बाई चेलक, श्रीमती रेखा देवार, उषा बारले, विशाल दास आदि पंडवानी के लोकप्रिय कलाकार है। महाभारत से संबंधित लोक कथाएं संपूर्ण भारत में विभिन्न नामों से प्रचलित हैं, छत्तीसगढ़ में यह पंडवानी के नाम से विख्यात है। पंडवानी एक ऐसी लोकगाथा है, जिसमें अंचल विशेष की लोक मान्यताओं, रुढ़ियों और परंपराओं को आत्मसात कर महाभारत की कथाएं को स्थानीय रुप दे दिया गया है। पंडवानी की गाथा में पूरा परिवेश छत्तीसगढ़ का है। उसमें रहन–सहन, खान–पान, आचार–विचार, तीज–त्यौहार, चाल–चलन, जादू तंत्र–मंत्र आधिभौतिक पात्रों की उपस्थिति आदि छत्तीसगढ़ के समस्त संस्कार मिलते हैं। पंडवानी में तंबूरा, हारमोनियम, तबला, ढोलक, मंजीरा, बांसुरी और बैंजो आदि का भी प्रयोग किया जाता है। डॉ. पी.सी. लाल यादव के शब्दों में "जिसमें छत्तीसगढ़ के लोक संस्कृति, लोक विश्वास और लोक मान्यताओं का बड़ा विस्तार पाया जाता है। यह विस्तार छत्तीसगढ़ के लोक जीवन के समस्त रंगों सुख–दुख रुदन हंसी, मजाक, रीति रिवाज, मया पीरा, उत्साह उमंग को अभिव्यक्त करने में समर्थ है। पंडवानी के गायन विधि को विद्वानों ने दो प्रकारों में विभक्त किया है, एक है कापालिक शैली और दूसरी है वेदमती शैली, संगीत नृत्य और अभिनय का समुचित समन्वय कर ऐसे नाटक जिनके अभिनय के लिये किसी प्रकार की रंगमंचीय तैयारी नहीं करनी पड़ती, उन्हें लोक नाट्य कहा जाता है। यह लोकनाट्य लोक कथानकों, लोक विश्वासों और लोक तत्वों को अपने में समेटे चलता है और जीवन का प्रतिनिधित्व करता है। छत्तीसगढ़ी लोक नाट्य के प्रमुख तीन रुप लोकप्रिय हैं नाचा, गम्मत और रहस छत्तीसगढ़ में लोक नाट्य नाचा मनोरंजन और शिक्षा का सर्वाधिक लोकप्रिय माध्यम है। हास्य और व्यंग्य का प्रयोग करते हुए लोक कलाकार अभिनय करते हुए दर्शकों तक अपनी बात पहुंचाने का प्रयास करत हैं। गम्मत की छोटी–छोटी कथाओं में जनजीवन की कसक, पीड़ा, दर्द को प्रस्तुत किया जाता है। रहस लीला या रासलीला श्रीमद भागवत में वर्णित राधाकृष्ण की मनोहारी रासलीला की कथा के गान का अभिनय के साथ प्रस्तुतिकरण है। भगवान श्रीकृष्ण इस लोकनाट्य के नायक हैं और राधा नायिका, कंस खलनायक। कृष्ण की बाल सुलभ लीलाओं

से लेकर कंस वध तक की कथा रहस लीला के अभिनय का विषय है, इसमें विदूषक या हास्य अभिनेता भी अभिनय करते हैं जो मनोरंजन में सहायक होते हैं।

लोक सुभाषित के अन्तर्गत कहावतें, मुहावरे और पहेलियां आदि आते हैं। इनका उपयोग भाषा को सरस और रुचिकर बनाने के लिये होता है। पूर्ववर्ती पीढ़ी के अनुभव और ज्ञान भंडार को नई पीढ़ी को सौंपने और उनसे प्रेरणा लेने में लोकोक्तियां और मुहावरे की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं।

निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ के धरती पुत्रों ने किसी कुशल चित्रकार की भांति यहाँ के जनजीवन को लोक साहित्य में विभिन्न रंगों से रंगा है। छत्तीसगढ़ के आम आदमी की मानसिक भावनाएं और आकांक्षाओं को आकार दिया है। आधुनिक सभ्यता और संस्कृति के बीच अपनी माटी की सौंधी महक से संपूर्ण परिवेश को महका दिया है। वर्तमान समय की कठिनाइयों और जटिलताओं से भी छत्तीसगढ़ी साहित्य उबारने में सहायक है। यहाँ का साहित्य मानव समुदय को शारीरिक एवं मानसिक संतापों एवं तनावों से भी मुक्त रखता है। नगरों, महानगरों में निवासरत छत्तीसगढिया भी अपनी माटी की महक और संस्कृति को अपने हृदय में संजोकर रखे हुए हैं। ग्रामीण परिवेश में रचे बसे छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य का सौंदर्य आधुनिकता के संपर्क में आने के बाद भी अपनी मधुरता अपनी अल्हड़ता और निरालेपन को सुरक्षित रखे हुए है।

संदर्भ सूची

1. उपाध्याय, कृष्ण देव, *लोक साहित्य की भूमिका,* साहित्य भवन, इलाहाबाद, पृ.सं 273
2. साहू, बिहारी लाल, *छत्तीसगढ़ी भाषा और लोक साहित्य,* भावना प्रकाशन, दिल्ली आमुख पृ.सं.1
3. उपाध्याय, कृष्ण देव, *लोक संस्कृति की रुपरेखा,* लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ.सं. 28
4. वर्मा, शकुंतला, *छत्तीसगढ़ी लोक जीवन और लोक साहित्य का अध्ययन,* रचना प्रकाशन, पृ.सं. 102
5. शुक्ला, गेंदलाल, *भावपूर्ण छत्तीसगढ़ी लोक गीत,* बिहनिया प्रवेशांक, मार्च 2008, प्र.सं.43
6. वर्मा, शकुंतला, *छत्तीसगढ़ी लोक जीवन और लोक साहित्य का अध्ययन,* रचना प्रकाशन, पृ.सें 245

****